

बाल विकास

प्रत्येक बच्चे के विकास की विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं। इसी अवस्थाओं में बच्चों का निश्चित विकास होता है। इसी सीमा का ध्यान रखते हुए विकास को निम्नलिखित चरणों में विभाजित करने का प्रयास किया गया है।

- 1 - गर्भावस्था → गर्भाधान से जन्म तक
- 2 - शैशवावस्था → जन्म से 6 वर्ष तक
- 3 - बाल्यावस्था → 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
- 4 - किशोरावस्था → 12 से 18 वर्ष तक
- 5 - युवावस्था → 18 वर्ष से 25 वर्ष तक
- 6 - प्रौढ़ावस्था → 25 वर्ष से 55 वर्ष तक
- 7 - वृद्धावस्था → 55 वर्ष से मृत्यु तक

→ इस समय अधिकतर विद्वान मानव-विकास का अध्ययन निम्नलिखित चार अवस्थाओं के अन्तर्गत करते हैं।

- 1 - शैशवावस्था → जन्म से 6 वर्ष तक
- 2 - बाल्यावस्था → 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
- 3 - किशोरावस्था → 12 वर्ष से 18 वर्ष तक
- 4 - प्रौढ़ावस्था → 18 वर्ष से मृत्यु तक

1 / 30

(1) - शैशवावस्था (जन्म से 6 वर्ष तक)

→ श्रमण

- इस अवस्था को भावी जीवन की आधारशिला के रूप में देखा जाता है।
- इस अवस्था में व्यवहार पूरी तरह मूल प्रवृत्तियों से जुड़ा रहता है। जिसकी संतुष्टी वह तुरन्त चाहता है।
- सुख की चाह उसका एकमात्र प्रेरक होता है। वह हर उस कार्य से बचना चाहता है जो उसे कष्ट पहुँचाता है।
-

सामाजिक लक्षण - अन्य लक्षण - ① शारीरिक विकास तीव्र गति से होता है ② शिशु शारीरिक तथ्यों के दृष्टि से अनिश्चित होता है। ③ शिशु की सामाजिक क्रियाओं के अन्तर्गत ध्यान, स्मृति, कल्पना, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण आदि का विकास तेज से होता है। ④ शिशु सबसे अधिक और जल्दी अनुकरण विधि से सिखता है।

(2)- बाल्यावस्था (6 वर्ष से 12 वर्ष)

— फ्रायड

- ① इस अवस्था को मानव विकास का अनोखा काल कहा है। क्योंकि विकास की दृष्टि से यह एक जटिल अवस्था है।
 - 2 इस अवस्था में विभिन्न प्रकार के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक परिवर्तन बालक में होते हैं।
 - 3 पूर्व-बाल्याकाल — पूर्व-बाल्याकाल में बालक तेजी से बढ़ता है।
उत्तर-बाल्याकाल — उत्तर-बाल्याकाल में उसके विकास में स्थायित्व आ जाता है।
 - ④ फ्रायड के अनुसार इस अवस्था में बालक में तनाव की स्थिति समाप्त हो जाती है तथा वह बाहर की दुनिया को समझने लगता है। लेकिन वह परिपक्व नहीं होता है।
 - ⑤ बाल्यावस्था को ही हम - (Elementary School Age) या (Smart Age) स्मृति आयु या Direct Age (गंभीर अवस्था) आदि विभिन्न नामों से जानते हैं।
- सामाजिक लक्षण/अन्य लक्षण :- ① बच्चों में रचनात्मक कार्यों में विशेष आनन्द मिलता है। ② रचनात्मक प्रवृत्ति के साथ-साथ व्यंग्य करने की प्रवृत्ति भी जाग्रत होता है। ③ इस अवस्था में बच्चों में सामूहिक खेलों में भाग लेने की प्रवृत्ति बहुत अधिक विकसित हो जाती है।

(3) किशोरावस्था (Teen Age) - (12 से 18 वर्ष तक)

- 1 स्टेन्ली हॉल ने इस काल को तूफान एवं परेशानी का काल कहा है।
 - 2 पश्चिमी विद्वानों ने इसे (Teen Age) भी कहा है।
 - 3 इस अवस्था में किशोरों को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है।
 - 4 यह विकास की सबसे जटिल अवस्था मानी जाती है।
 - 5 इस काल में विशेषकर यौन दृष्टि से इस काल में अनेक परिवर्तन होते हैं। जिसकी वजह से किशोरों का जीवन तनाव, चिन्ता, संघर्ष आदि से घिर जाता है।
- सामाजिक लक्षण/अन्य लक्षण :- ① बच्चों के अस्तित्व का लगभग सभी किशोरों में परिवर्तन तीव्रता से होता है। इस अवस्था में बुद्धि, कल्पना तथा तर्क क्षमताएँ पर्याप्त विकसित हो जाती हैं। ③ किशोरों में स्थायित्व और समापन का अभाव रहता है। उसका मन विषयों के समान स्थिर नहीं होता है। वातावरण से समापन नहीं कर पाता है।

(4) प्रौढ़ावस्था (18 से)

- 1 इस अवस्था में किशोरावस्था धीरे-धीरे प्रौढ़ता या परिपक्वता की ओर बढ़ता है।
- 2 इस अवस्था में व्यक्ति दुनियाँ में प्रवेश करके अपने दायित्वों के प्रति जागरूक हो जाता है।
- 3 संक्षेप में यह आयु 'Teens' की समाप्ति तथा 'Twenties' का प्रारम्भ है।

बालविकास के सिद्धान्त

- 1 'अभिवृद्धि' एवं 'विकास' ये दोनों शब्द प्रायः एक ही अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं। किन्तु मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इनमें कुछ अन्तर होता है।
- 2 मोरेन्सन के अनुसार — "आवृद्धि शब्द का प्रयोग प्रायः शरीर तथा अंगों के आर तथा आकार में वृद्धि के लिए किया जाता है।"

1. बाल विकास के सामान्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं।

- | | |
|---|--|
| 1 - निरन्तरता का सिद्धान्त | 9 - परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त |
| 2 - वैयक्तिक अन्तर का सिद्धान्त | 10 - विकास की दिशा का सिद्धान्त |
| 3 - विकास क्रम की स्वरूपता | 11 - विकास सम्भवतः सीधा न होकर घुंलाकार होता है। |
| 4 - वृद्धि एवं विकास की गति की दर एक सी नहीं रहती। | 12 - वृद्धि और विकास की क्रिया वंशानुक्रम और वातावरण का संयुक्त परिणाम है। |
| 5 - निश्चित तथा पूर्वनिर्धार्य प्रतिक्रिया का सिद्धान्त | 13 - स्कीफरिंग का सिद्धान्त |
| 6 - वंशानुक्रम तथा वातावरण की अन्तःक्रिया का सिद्धान्त | 14 - विकास की भाविष्यवाणी की जा सकती है। |
| 7 - प्रकाशक प्रगति का सिद्धान्त | 15 - समन्वय का सिद्धान्त |

बाल विकास से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण सिद्धान्त (Imp)

- 1 - पुनर्वसन सिद्धान्त — इस सिद्धान्त का प्रतिपादक — जान डोलार्ड और नील मिलर के अनुसार —
बच्चे जैसे-2 वर्ष होते हैं विकास होता है। अधिगम करता जाता है।
इन्होंने बाल्यावस्था के अनुभवों को व्यक्त व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण कारकों के रूप में स्वीकार किया है।
इन्होंने अचेतक कारकों के अतिरिक्त चिन्ता तथा अधिगमित मन के व्यक्तित्व शक्तिशालिता में बहुत महत्व है।
जैसे — नवजात शिशु का स्तनपान से सम्बन्धित अति व्यवहार इसकी भोजन की आवश्यकता के लिए अधिक समय तक पर्याप्त नहीं है। उसे भुख की आवश्यकता के लिए या पूर्ण करने के लिए कुछ अधिक स्तनपान के जटिल व्यवहारों को सीखना होता है।
इनके अनुसार अधिगम के चार महत्वपूर्ण अवस्थाएँ हैं।
① अन्तर्नेत्रि (अभिप्रेरण) ② संकेत (इन्दीपक) ③ प्रत्युत्तर (स्वयं का व्यवहार) ④ पुनर्वसन (पुनरुत्तर)

1- बुद्धि (Intelligence)

- ↳ बुद्धि का वैज्ञानिक रूप सर्वप्रथम अमेरिकी मनोवैज्ञानिक Spearman ने 1904 में अपनी पुस्तक "The Nature of Intelligence and Principles of Cognition" में दिया है।

बैवेस्टर के अनुसार - "बुद्धि ज्ञान ग्रहण करने की व इसको व्यवहार में लाने की योग्यता है।"

2- बुद्धि का अर्थ एवं परिभाषा तथा स्वरूप/प्रकृति

- ↳ बुद्धि क्या है? इसका स्वरूप क्या है? इस सम्बन्ध में विज्ञानविदों और मनोवैज्ञानिकों में मतभेद रहा है। अतः बुद्धि की परिभाषा उनके विचारों/स्वरूप के आधार पर निम्नलिखित किया जा सकता है।
- (1) समस्या-समाधान की योग्यता (2) अमूर्त चिन्तन की योग्यता
(3) सीखने की योग्यता (4) - समायोजन की योग्यता (5) सम्मिश्र परिभाषा

(1) समस्या-समाधान की योग्यता

- (i) रेक्सनाइट के अनुसार - "बुद्धि वह योग्यता है जो व्यष्टि की पूर्ति में तर्क करना तथा समस्या-समाधान के निमित्त हमारे मन में विचारों को जाग्रत करती है।"
- (ii) बर्ट के अनुसार - "बुद्धि अच्छी तरह निर्णय करने, समझने तथा तर्क करने की योग्यता है।"

[2] - अमूर्त चिन्तन की योग्यता

- (i) विने के अनुसार - "किसी समस्या को समझना, उसके विषय में तर्क करना तथा किसी निश्चित निर्णय पर पहुँचना बुद्धि की आवश्यक क्रिया है।"
- (ii) स्पीयरमैन के अनुसार - "बुद्धि साम्प्रतिक चिन्तन है।"
- (iii) टर्मेन के अनुसार - "एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान है जिसमें अमूर्त चिन्तन करने की योग्यता रहता है।"

(2) सामाजिक अधिगम का सिद्धान्त - इस सिद्धान्त के प्रतिपादक बंदुरा एवं वाल्सर्स हैं।

- ↳ बंदुरा ने एक प्रयोग में बच्चों को एक फिल्म दिखाई जिसमें एक व्यक्ति व्यक्ति के व्यवहार को प्रदर्शित किया गया था। फिल्म में तीन भाग थे प्रत्येक बच्चों को केवल एक प्रकार की फिल्म दिखाई गई। पहली फिल्म में फिल्म का हीरो अक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करता था इस व्यवहार के लिए उसे तत्व दिया जाता था,
- ↳ दूसरी फिल्म में हीरो अक्रामक व्यवहार करता था इस अक्रामक व्यवहार के लिए उसे पुरस्कृत होता था किया गया।
- ↳ तीसरी फिल्म में अक्रामक व्यवहार के लिए हीरो को न ही पुरस्कृत किया जाता था और न ही दण्डित किया जाता था
- ↳ इन परिस्थितियों में रखकर बच्चों के व्यवहार का निरीक्षण कर देखा गया कि बच्चों ने इस व्यवहार का अनुकरण अपेक्षाकृत कम किया जो हीरो के अक्रामक व्यवहार और दण्ड से सम्बन्धित था

Questions

- (1) बुद्धि का पूर्ण विकास 14 से 16 वर्ष के बीच माना है - टर्मेन, जोन्स कोनर्स एवं स्पीयरमैन
- (2) बुद्धि में प्रवृत्ता का विकास ही सम्भव है - मनोशास्त्रियों के अनुसार

[3]- सीखने की योग्यता :-

- मैन्डगल के अनुसार - "बुद्धि जन्मजात प्रवृत्ति को अतीत के अनुभव के प्रकाश में सुधारने की योग्यता है।"
- डियरबोर्न के अनुसार - "बुद्धि सीखने या अनुभव का लाभ उठाने की योग्यता है।"
- वकिंघम के अनुसार - "सीखने की योग्यता बुद्धि है।"

[4]- समायोजन की योग्यता

- कालविन - "एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धि प्रकट करता है जिस अनुपात में वह अपने नए वातावरण में समायोजित होने की क्रिया सीख चुका है या सीख सकता है।"
- क्रूण - बुद्धि नवीन एवं विभिन्न परिस्थितियों में अपने विचारों को समायोजित करने की योग्यता है।
- बर्ट - सचेतनता नवीन परिस्थितियों में अपने समायोजित करने की योग्यता को बुद्धि कहते हैं।
- स्टर्न - "नवीन परिस्थितियों में अपने विचारों को समायोजित करने की क्षमता बुद्धि है।"

[5]- सम्बन्धित परिभाषा -

- रेक्सनाइट - बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा हम किसी उद्देश्य की पूर्ति या किसी समस्या का समाधान करने के लिए सम्बन्धित वस्तुओं एवं विचारों को सोचते हैं।
- वेक्सलर - बुद्धि व्यक्ति की सम्पूर्ण क्षमताओं का योग या सार्वभौमिक योग्यता है। जिसके द्वारा वह अदृश्यपूर्ण कार्य करता है। तर्कपूर्ण ढंग से सोचता है। तथा प्रभावपूर्ण ढंग से वातावरण के साथ सम्पर्क स्थापित करता है।

बुद्धि के सिद्धान्त (Imp)

Sr No	प्रमुख सिद्धान्त	प्रतिपादक
1	एक कारक (Uni-factor) सिद्धान्त (Imp)	विने, टरमन, तथा स्टर्न ✓
2	द्विकारक (Two-factor) सिद्धान्त (Imp)	स्पीयरमैन ✓
3	बहुकारक (Multi-factor) सिद्धान्त (Imp)	थॉर्नडाइक ✓
4	समूह कारक (Group-factor) सिद्धान्त (Imp)	थर्सटन ✓
5	पदानुक्रमिक (Hierarchical) सिद्धान्त	फिलिप वर्नन
6	त्रिमायामी (Three-Dimensional) सिद्धान्त	जे० पी० गिलफोर्ड
7	तरल ठोस (Fluid-Crystallized) बुद्धि सिद्धान्त	आर० पी० कैटल ✓
8	बहु बुद्धि (Multiple) सिद्धान्त	होवर्ड गार्डनर ✓
9	संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त (Imp)	जीन पियाजे ✓
10	त्रितन्त्र (Triarchic) सिद्धान्त (Imp)	रॉबर्ट स्टैनबर्ग ✓
11		
12		

अन्य परिभाषाएँ

- वुडवर्थ (Woodworth) - "बुद्धि कार्य करने की एक विधि है।"
- वुडरो (Woodrow) - "बुद्धि ज्ञान का अर्जन करने की क्षमता है।"
- गाल्टन (Galton) - "बुद्धि पहचानने तथा सीखने की क्षमति है।"
- थॉर्नडाइक (Thorndike) - "वास्तविक परिस्थितियों के अनुसार अपेक्षित प्रतिक्रिया की योग्यता ही बुद्धि है।"

Observations

- समूहकारक कारक सिद्धान्त को संज्ञात्मक सिद्धान्त भी कहते हैं।
- बहुकारक सिद्धान्त को अस्तित्वत्मक / बहुधात्मक सिद्धान्त आदि नामों से भी जानते हैं।
- पदानुक्रम सिद्धान्त को क्रमिक महत्व का सिद्धान्त भी कहते हैं।
- द्विकारक सिद्धान्त के दो कारक हैं। ① G कारक ② S कारक
- एक कारक को इकाई का सिद्धान्त / एक सत्तात्मक सिद्धान्त के नाम से जानते हैं।

बुद्धि लाब्धि एवं उसका मापन INTELLIGENCE QUOTIENT AND ITS MEASUREMENT

- बुद्धि-लाब्धि वालक में स्थित बुद्धि की मात्रा का मापन है।
 • टरमैन ने मानसिक आयु के बच्चे बुद्धि-लाब्धि की विधि खोजी और सूत्र निकाला।

$$\text{बुद्धि लाब्धि (I.Q.)} = \frac{\text{मानसिक आयु (M.A.)}}{\text{वास्तविक आयु (C.A.)}} \times 100$$

$$\boxed{\text{I.Q.} = \frac{\text{M.A.}}{\text{C.A.}} \times 100}$$

Where M.A. = Mental Age
C.A. = Chronological Age

Ex:- यदि बच्चे की वास्तविक आयु 8 वर्ष है और वह 10 वर्ष के सामान्य बालक का कार्य पूर्ण कर लेता है। तो उसकी मानसिक आयु 10 वर्ष होगी।

$$\text{I.Q.} = \frac{10}{8} \times 100 = 5 \times 25 = 125$$

बुद्धि लाब्धि	टरमैन के द्वारा प्रतिष्ठा/वर्ग	बुद्धि लाब्धि	डा० कामथ के द्वारा प्रतिष्ठा	प्रतिशत
140 से ऊपर	प्रतिभाशाली (Genius)	140 से ऊपर	प्रतिभाशाली	0.5
120-139	बहुत अच्छे (Very Superior)	130 से 139.5	असामान्य	3.5
110-119	अच्छे (Superior)	120-129.5	अत्यन्त उच्च	9.0
90-109	उत्कृष्ट	110-119.5	उच्च	15.0
80-89	सामान्य	90-109.5	सामान्य	42.0
70-79	मंद	80-99.5	पिछड़े	15.0
60-69	निर्बल बुद्धि	70-79.5	अति पिछड़े	9.0
50-59	हीन बुद्धि	60-69.5	सीमा पर	3.5
45-49	सूक्ष्म	50-59.5	मूर्ख	1.5
40-44	अल्प	40-49.5	मंद बुद्धि	0.5
0-39	अल्प	30 से नीचे	अल्प	

Note:- टरमैन के विकसित IQ विवरण आपने देखा जहाँ नीचे स्टेनफोर्ड-बिने परीक्षण पर मैरिल (1938) तथा वेब्लर (1955) एडल्ट इण्टेलिजेंस टेस्ट के IQ का विवरण निचे दिया है।

IQ विवरण वेब्लर के अनुसार		IQ विवरण मैरिल के अनुसार	
IQ	विवरण	IQ	विवरण
130 या अधिक	अति श्रेष्ठ (प्रतिभाशाली)	140 या अधिक	अति श्रेष्ठ (प्रतिभाशाली)
120-129	श्रेष्ठ बुद्धि	120-139	श्रेष्ठ बुद्धि
110-119	उच्च सामान्य बुद्धि	110-119	उच्च सामान्य बुद्धि
90-109	सामान्य बुद्धि	90-109	सामान्य बुद्धि
80-89	मंद बुद्धि	80-89	मंद बुद्धि
70-79	क्षीण बुद्धि	70-79	क्षीण बुद्धि
70 से नीचे	निश्चित क्षीण बुद्धि	70 से नीचे	निश्चित क्षीण बुद्धि

Note (Imp):- कर्ट ने अपनी पुस्तक 'मानसिक तथा शिक्षा लाब्धि परीक्षण' में बुद्धि के आधार पर वर्गीकरण तथा शिक्षा की आयु एवं शिक्षा लाब्धि को स्पष्ट किया।

* { बुद्धि का परीक्षण
Intelligence Test } *

- बुद्धि को मापने के लिए सन् 1911 में बिने (Binet) तथा साइमन (Simon) ने मिलकर एक परीक्षण पत्रक तैयार किया।
 → सन् 1915-1916 में क्रमशः वर्ट तथा टरमैन ने बिने प्रश्नावली में संशोधन किया।
 → टरमैन ने बुद्धि लाब्धि का मान निकाला। बिने ने बुद्धि मापन का मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया।
 → उन्होंने कहा कि मास्टर की विभिन्न शक्तियाँ परस्पर गुपी हुई हैं। उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। उन्होंने तीन विशेषताओं-
 (1) प्रयोजन (Purposefulness)
 (2) नयी परिस्थिति में अपने को अनुकूल करने की योग्यता (Capacity to make adaptation);